✺ 30 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को बाप कहते हैं कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। ओम् शान्ति का अर्थ तो बच्चों को समझाया है। बाप भी बोलते हैं, तो बच्चे भी बोलते हैं ओम् शान्ति क्योंकि आत्मा का स्वधर्म है शान्त। तुम अब जान गये हो कि हम शान्तिधाम से यहाँ आते हैं पहले-पहले सुखधाम में, फिर ८४ पुनर्जन्म लेते-लेते दु:खधाम में आते हैं।

2] बाप तुम बच्चों की कितनी निष्काम सेवा करते हैं। तुम बच्चों को सुखी कर फिर वानप्रस्थ, परमधाम में बैठ जाते हैं। तुम भी परमधाम के वासी हो। उसको निर्वाणधाम, वानप्रस्थ भी कहा जाता है। बाप आते हैं बच्चों की खिदमत करने अर्थात् वर्सा देने। यह खुद भी बाप से वर्सा लेते हैं।

3] बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों को पार्ट बजाना ही है। यह पार्ट तुमको अनादि, अविनाशी मिला हुआ है। तुम कितना वारी सुख-दु:ख के खेल में आये हो। कितना बार तुम विश्व के मालिक बने हो।

4] पावन दुनिया में तो कभी मैं आता ही नहीं हूँ। तुम पतित हो, मुझे बुलाते हो कि आकर पावन बनाओ। आखरीन तुम्हारी याद फलीभूत होगी ना। जब पुरानी दुनिया खत्म होने का समय होता है, तब मैं आता हूँ। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। ब्रह्मा द्वारा अर्थात् ब्राह्मणों द्वारा। पहले चोटी ब्राह्मण, फिर क्षत्रिय..... तो बाजोली खेलते हो।

5] भारत जैसा सालवेन्ट और कोई देश नहीं। इन जैसा तीर्थ और कोई बन नहीं सकता। परन्तु आज तो हिन्दू धर्म के अनके तीर्थ हो पड़े हैं। वास्तव में बाप जो सर्व की सद्गति करते हैं, तीर्थ तो उनका होना चाहिए। यह भी ड्रामा बना हुआ है। समझने में बहुत सहज है। परन्तु नम्बरवार ही समझते हैं क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है। स्वर्ग के मालिक यह लक्ष्मी-नारायण हैं। यह है उत्तम से उत्तम पुरूष जिनको फिर देवता कहा जाता है। दैवी गुण वाले को देवता कहा जाता है।

6] तो बाप समझाते हैं यह कितना वन्डरफुल ड्रामा है। इतनी छोटी-सी आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, जो कभी मिटने वाला नहीं है। इनको अनादि-अविनाशी ड्रामा कहा जाता है। गॉड इज वन। रचना अथवा सीढ़ी और चक्र सब एक ही है।

7] परमात्मा तो बाप, टीचर, गुरू रूप में आए हमें वर्सा देते हैं। तो पहले उस बाप को जाना है, फिर टीचर से पढ़ना है जिस पढ़ाई से भविष्य जन्म-जन्मान्तर सुख की प्रालब्ध बनेगी अर्थात् जीवनमुक्ति पद में पुरूषार्थ अनुसार मर्तबा मिलता है। और गुरू रूप में पवित्र बनाए मुक्ति देता है, तो इस राज़ को समझ ऐसा पुरूषार्थ करना है। यही टाइम है पुराना खाता खत्म कर नई जीवन बनाने का, इसी समय जितना पुरूषार्थ कर अपनी आत्मा को पवित्र बनायेंगे उतना ही शुद्ध रिकार्ड भरेंगे फिर सारा कल्प चलेगा, तो सारे कल्प का मदार इस समय की मदार पर है।

8] देखो, इस समय ही तुम्हें आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान मिलता है, हमको सो देवता बनना है और अपनी चढ़ती कला है फिर वहाँ जाके प्रालब्ध भोगेंगे। वहाँ देवताओं को बाद का पता नहीं पड़ता कि हम गिरेंगे, अगर यह पता होता कि सुख भोगना फिर गिरना है तो गिरने की चिंता में सुख भी भोग नहीं सकेंगे। तो यह ईश्वरीय कायदा रचा हुआ है कि मनुष्य सदा चढ़ने का पुरूषार्थ करता है अर्थात् सुख के लिये कमाई करता है। परन्तु ड्रामा में आधा-आधा पार्ट बना पड़ा है जिस राज़ को हम जानते हैं, परन्तु जिस समय सुख की बारी है तो पुरूषार्थ कर सुख लेना है, यह है पुरूषार्थ की खूबी।

9] एक्टर का काम है एक्ट करने समय सम्पूर्ण खूबी से पार्ट बजाना, जो देखने वोले हेयर हेयर (वाह वाह) करें, इसलिए हीरो हीरोइन का पार्ट देवताओं को मिला है जिन्हों का यादगार चित्र गाया और पूजा जाता है। निर्विकारी प्रवृत्ति में रह कमल फूल अवस्था बनाना, यही देवताओं की खूबी है। इस खूबी को भूलने से ही भारत की ऐसी दूर्दशा हुई है, अब फिर से ऐसी जीवन बनाने वाला खुद परमात्मा आया हुआ है, अब उनका हाथ पकड़ने से जीवन नईया पार होगी।

❁ 30 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

[2]

✺ योग-

1] कहते हैं अब इस दु:खधाम को बुद्धि से निकाल दो। जो नई दुनिया स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं, उनका मालिक बनने लिए मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें। तुम फिर से सतोप्रधान बन जायेंगे, इसको कहा जाता है सहज याद। जैसे बच्चे लौकिक बाप को कितना सहज याद करते हैं, वैसे तुम बच्चों को बेहद के बाप को याद करना है।

2] बहुत सहज बात कहते हैं– अपने शान्तिधाम को याद करो, जो बाप का घर वह तुम्हारा घर है और नई दुनिया को याद करो, वह तुम्हारी राजधानी है।

3] ऐसा कोई नहीं समझे मैं तो अभी छोटा हूँ, छोटे बड़े को सुख तो चाहिए ना, परन्तु दु:ख किस चीज़ से मिलता है उसका भी पहले ज्ञान चाहिए। अब तुमको नॉलेज मिली है कि इन पाँच विकारों में फंसने कारण यह जो कर्मबन्धन बना हुआ है, उनको परमात्मा की याद अग्नि से भस्म करना है, यह है कर्मबन्धन से छूटने का सहज उपाय। इस सर्वशक्तिवान बाबा को चलते-फिरते श्वांसों श्वांस याद करो। अब यह उपाय बताने की सहायता खुद परमात्मा आकर करता है, परन्तु इसमें पुरूषार्थ तो हर एक आत्मा को करना है।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– याद और पढ़ाई से ही डबल ताज मिलेगा, इसलिए अपनी एम ऑबजेक्ट को सामने रख दैवीगुण धारण करो।

2] अब देह-अभिमान छोड़ देही-अभिमानी बनना है।

✺ सेवा-

1] कई बार बच्चे सेवा में सिर्फ दिमाग यूज़ करते हैं लेकिन दिल और दिमाग दोनों को मिलाकर सेवा करो तो सेवा में सफलतामूर्त बन जायेंगे। जो सिर्फ दिमाग से करते हैं उन्हें दिमाग में थोड़ा टाइम बाप की याद रहती है कि हाँ बाबा ही कराने वाला है लेकिन कुछ समय के बाद फिर वो ही मैं-पन आ जायेगा। और जो दिल से करते हैं उनके दिल में बाबा की याद सदा रहती है। फल मिलता ही है दिल से सेवा करने का। और यदि दोनों का बैलेन्स है तो सदा सफलता है।